प्रैक्टिकल में स्वर्ग का रचयिता कौन?

डी.वी.डी. नं.380, वी.सी.डी. नं.2315, ऑडियो नं.2801, प्रातः क्लास 05.11.66

प्रातः क्लास चल रहा था- 05.11.1966। शनिवार को चौथे पेज के मध्यांत में बात चल रही थी- पतित-पावन बाप आते हैं तो पावन देश खुलता है। ये जो पतित हैं सो पावन हो जाते हैं। तो पावन करने वाला भी तो पतित-पावन, पावन देश बनाएगा ना! तो पावन देश भारत में ही तो ये राज्य करते थे ना। हम तो ठीक कहते हैं ना- भगवान बेहद का ऊँचे-ते-ऊँचा, उनसे भारत को अभी वर्सा मिल रहा है और सर्वव्यापी कहना- ये भूल है। इस सर्वव्यापी कहने में तो कोई फ़ायदा ही नहीं है; क्योंकि वर्सा तो बाप से मिलता है। तो मैं भारत को आ करके, जो भारत स्वर्ग से नरक बन गया है, फिर आ करके हम भारत को स्वर्ग बनाते हैं अर्थात् देवी-देवताओं का राज्य बनाते हैं, वाइसलेस बनाते हैं अथवा यूँ कहें कि पवित्र गृहस्थ-धर्म बनाते हैं; क्योंकि आदि सनातन देवी-देवता जो धर्म था, वो पवित्र था- पवित्र गृहस्थ-आश्रम और अभी तो है अपवित्र। गृहस्थी तो हैं; परंतु अपवित्र हैं, दृष्टि से, वृत्ति से, ज्ञानेन्द्रियों से, कर्मेन्द्रियों से कुछ-न-कुछ व्यभिचारी बन गए। तो अपवित्र गृहस्थ-धर्म कहें; क्योंकि आदि सनातन देवी-देवता जो धर्म था, वो पवित्र था।

ये तो पतित कहते हैं ना! सतयुग में तो नहीं कोई कहेंगे- पतित-पावन, आओ! क्यों बुलाएँगे? वहाँ तो कोई पतित होता ही नहीं है, सब वाइसलेस हैं और ये अभी हैं विषियस। तो बाप आ करके बैठकर समझाते हैं कि मुझे याद करो। कौन समझाते हैं? (किसी ने कहा- बाप समझाते) कौन-सा बाप? (किसी ने कहा- शिवबाप) शिवबाप समझाते हैं- मुझे याद करो! जैसे को याद करेंगे वैसे ही बन जावेंगे। आत्माओं के बाप शिव को याद करेंगे तो 5 हज़ार वर्ष कहाँ बैठना पड़ेगा? (किसी ने कहा- परमधाम में) जो भी धर्मपिताएँ हैं, उनके फॉलोअर्स हैं, वो निराकार बाप को याद करते हैं-आत्मा निराकार तो बाप भी निराकार-तो उनको कहाँ बैठना पड़ता है? परमधाम में बैठना पड़ता है। तो जैसे को याद करेंगे वैसे ही बनेंगे; क्योंकि आत्माओं का बाप/सुप्रीम सोल बाप बड़े-ते-बड़ा संन्यासी है; संन्यासी है या गृहस्थी है? (किसी ने कहा- संन्यासी) कितने लम्बे समय का संन्यासी है? (सभी ने कहा- 5000 वर्षों का) सिर्फ़ संगमयुग में आते हैं।

तो जिस तन में प्रवेश करते हैं, उस तन को 'ब्रह्मा' नाम देते हैं। पहले मुकर्रर रूप से प्रवेश करते हैं तो 'परमब्रह्म' नाम पड़ता है और वो परमब्रह्म, शिवबाप त्रिकालदर्शी से मास्टर त्रिकालदर्शी बनने का ज्ञान लेता है; क्योंकि आत्माओं का बाप जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है तो त्रिकालदर्शी है और हम सभी आत्माएँ जन्म-मरण के चक्र में आने वाली हैं तो सब भूल जाते हैं। तो वो बाप जिस मुकर्रर रथ में प्रवेश करते हैं, वो मुकर्रर रथ 'भाग्यशाली रथ' कहा जाता है। क्यों भाग्यशाली कहा जाता है? क्योंकि बड़ा बच्चा बाप की प्रॉपर्टी को सबसे जास्ती लेकर उसकी कदर करता है; इसीलिए भारतीय परम्परा में जो भी राजाएँ हुए, उन्होंने अपने बड़े बच्चे को राजाई दी। इस संगमयुग से परम्परा चलती है; लेकिन वो आत्माओं का निराकार बाप क्या वर्सा देते हैं? (किसी ने कहा- ज्ञान का वर्सा) निराकार से तो निराकारी वर्सा ही मिलता है, साकार से साकारी वर्सा मिलता है। तो निराकार बाप से निराकारी ज्ञान का नम्बरवार वर्सा मिलता है।

उस ज्ञान की, उस वर्से की जो बच्चे नम्बरवार कदर करते हैं, उनको क्या प्राप्ति होती है? पढ़ाई से प्राप्ति होती है ना! ऊँच पद बनता है। ऊँच पद है राजाई का और राजाओं में भी छोटे राजाएँ, बड़े राजाएँ, मीडियम राजाएँ होते हैं। दुनिया में भी विदेशी आक्रान्ताओं ने बहुत कोशिश की कि हम दुनिया के बड़े-ते-बड़े विश्व के बादशाह बन जाएँ; लेकिन वो सब-के-सब देह-अभिमानी धर्मपिताओं को फॉलो करने वाले थे।

देह-अभिमान से हिंसा होती है और आत्म-अभिमानी, अहिंसक बनता है। तो परमपिता परमात्मा शिव जो ज्ञान देते हैं, वो अहिंसा का ज्ञान देते हैं। गीता-ज्ञान अहिंसक युद्ध सिखाता है, जिस अहिंसक युद्ध में बड़े-ते-बड़ा युद्ध है- काम-विकार का युद्ध; क्योंकि काम जीते जगत जीत कहा जाता है, इन्द्रिय जीते जगतजीत कहा जाता है। तो बाप राजयोग के द्वारा इन्द्रियों को जीतना सिखाते हैं, जिस योग में राज़ भरा हुआ है। 63 जन्म जिन विकारी इन्द्रियों का सुख लेते आए और विकारी सुख लेने से आत्मा तेजी से पतित होती गई/क्षीण होती गई/शक्ति नष्ट होती गई, उस नष्ट होती हुई शक्ति को, जो त्रिकालदर्शी सर्वशक्तिवान शिव है, वो हम बच्चों को मास्टर त्रिकालदर्शी और मास्टर सर्वशक्तिवान बनाता है, प्रैक्टिकल में बनाता है। प्रैक्टिकल, शरीर के साथ होता है, शरीर की कर्मेन्द्रियों के साथ होता है। प्रैक्टिकल ज्ञान यही देता है कि कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हुए सर्वशक्तिवान बाप की ऐसी गहरी याद में रहें कि इन्द्रियाँ और इन्द्रियों का रस लेना भूल जाएँ। ''प्रैक्टिस मेक्स ए मेन परफेक्ट,'' जो गीता में भी कहा-''अभ्यासेन तु कौन्तेय'' (6/35)- अभ्यास करने से मन एकाग्र हो सकता है; नहीं तो मन बड़ा प्रबल है।

शिवबाप तो कहते हैं- मेरे को तो मन ही नहीं है; मैं तो अमन हूँ। जिनको मन होता है और मन से संकल्प-विकल्प करते हैं, वो मनुष्य कहे जाते हैं। भगवान भी मनुष्य तन में आ करके सिखाता है कि मन को कैसे एकाग्र किया जाए/कण्ट्रोल किया जाए। मन कण्ट्रोल बनेगा तो दसों इन्द्रियाँ कण्ट्रोल्ड हो जाएँगी; ''मन के हारे हार और मन के जीते जीत।'' मन की एकाग्रता के लिए दो तरीके बताए- एक तो इस पुरानी दुनिया से वैराग, अपनी देह से वैराग, देह के सम्बंधियों से वैराग, देह के पदार्थों से भी वैराग और जब ऐसा वैराग आता है, तो बुद्धि इस पंचभूतों की दुनिया से हट जाती है और आत्मा को बाप की याद आती है।

जो आत्माएँ आत्मिक रूप में स्थित हो करके परमपिता परमात्मा शिव के उस पुरुषार्थी रूप को पहचान लेती हैं, जो पुरुषार्थी रूप 'मन कहो, घोड़ा कहो, बैल कहो', उसको पूरा कण्ट्रोल कर लेता है; इसीलिए शंकर को बैल पर सवार दिखाया जाता है; परंतु क्या हमेशा सवार रहता है? नहीं! अगर मन पर पहले से ही सवारी की होती, तो शंकर को याद में बैठा हुआ क्यों दिखाते हैं? याद में बैठना माना योग में रहना। अपने से बड़े को ही याद किया जाता है। शंकर भी त्रिदेवों में शिव बाप का बड़ा बच्चा कहा जाता है, देव-देव महादेव कहा जाता है और वो भी महादेव टाइटिल तब मिलता है, जब बाप को निरंतर याद करता है, शिवबाप को ऐसा ज्ञान है कि इस संसार में मुकर्रर रथ कौन-सा है, जिस रथ को 'भाग्यशाली रथ' कहा जाता है। ऐसा भाग्यशाली, जो जन्म-जन्मांतर के लिए सद्भाग्य का अर्जन करता है; इसीलिए गीता में उसका नाम 'अर्जुन' दिया है। अर्जुन के रथ में शिव बाप आते हैं और इस बात को जो-2 मनुष्य-आत्माएँ पक्का करती

जाती हैं कि इस मनुष्य-सृष्टि में सबसे जास्ती सद्भाग्य धारण करने वाली आत्मा कौन है, हीरो पार्टधारी आत्मा कौन है, तो वो सभी आत्माएँ नम्बरवार निश्चय धारण करने के कारण, नम्बरवार मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा लेती हैं।

अव्वल नम्बर सुख और शांति का, मुक्ति और जीवनमुक्ति का; जीवन में रहते-2 दुख-दर्दों से मुक्ति (का) वर्सा किससे मिलता है? डॉक्टर का पद लेने वाला होगा तो डॉक्टरी सिखाएगा, डॉक्टर बनाएगा; जमींदार होगा, बड़ा जमीन का मालिक होगा, तो अपने बच्चों को जमीन का मालिक बनाएगा। अब शिवबाप किसका मालिक है? वो भी बेहद का बाप और मनुष्य-सृष्टि का बाप भी बेहद का बाप। शिवबाप से क्या वर्सा मिलता है? बाप है ना! तो वर्सा तो देता है ना! क्या वर्सा मिलता है? (किसी ने कहा- सुख-शांति का वर्सा) सुख-शांति का वर्सा देता है! वो खुद सुख लेता है? (किसी ने कहा- नहीं) सतयुग में सुखी जीवन में आता है? (किसी ने कहा- नहीं) तो देगा कैसे? (किसी ने कहा- मुक्ति का वर्सा देता है) (किसी ने कहा- मनुष्य-सृष्टि के बाप द्वारा जीवनमुक्ति का वर्सा देता है।) खुद मुक्त है? सदा मुक्त है कि बोलता है- मुझे भी इस पतित दुनिया में आना पड़ता है, मैं भी ड्रामा के बंधन में बँधा हुआ हूँ? "मैं भी ड्रामा में नूँधा हुआ हूँ। .... पतित दुनिया में ही मुझे आना है।" (मु.ता. 18.2.67 पृ.3 मध्यादि) तो वर्सा देने वाला बाप साकार में ऐसा चाहिए जो साकार सुख का वर्सा दे।

साकार सुख का वर्सा है 'स्वर्ग' अर्थात् स्वस्थिति में गया; परिस्थिति से परे हो गया। पर है माया, पर है प्रकृति। प्रकृति के बंधन से भी परे और पाँच विकारों की माया से भी परे। खुद बनेगा तब तो दूसरों को देगा; खुद इंजीनियर नहीं होगा तो दूसरों को इंजीनियरी का वर्सा कैसे देगा? देगा? (सभी ने कहा- नहीं देगा) तो वास्तव में वो स्वरूप कौन-सा है, जिससे हमें सुख और शांति का वर्सा मिलता है? (किसी ने बीच में कहा- नारायण) नारायण तो सतयुग में होगा, 16 कला सम्पूर्ण होगा, देवता है। देवता मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं क्या? (किसी ने कहा- नहीं) अरे, नर को नारायण बनाने वाला कोई और है! जो नर को नारायण बनाता है। उसका नाम पड़ता है 'नारायण'; 'नार' माने ज्ञान-जल, 'अयन' माने घर। कहाँ घर बनाता है? ज्ञान-जल में अपना घर बनाता है, ज्ञान-जल से बाहर आता ही नहीं, पक्का-2 सूक्ष्मवतनवासी। ज्ञान सूक्ष्म है ना! ऐसे तो ब्रह्मा को सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं, विष्णु को भी सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं; लेकिन सबसे ऊँचा वतन कौन-सा है- ब्रह्मापुरी, विष्णुपुरी या शंकरपुरी? (किसी ने कहा- शंकर सूक्ष्मवतन) ब्रह्मापुरी फिर भी पंचभूतों की दुनिया के नज़दीक है और शंकरपुरी ऐसा स्थान है, जहाँ पंचभूत होते ही नहीं; बिलकुल परे।

पंचभूतों को प्रकृति कहा जाता है। 'प्र' माने प्रकृष्ट, 'कृति' माने रचना। प्रकृति रचना है, किसकी? प्रकृति-पति की। जैसे पति की रचना पत्नी होती है, ऐसे प्रकृति भी प्रकृति-पति की रचना है। कौन है प्रकृति-पति- शिवबाप, आत्माओं का बाप? अरे! आत्माओं का बाप तो प्रकृति के जो पाँच तत्व हैं, उनके बंधन में कभी आता ही नहीं है; वो तो सदैव परे रहने वाला है। जो प्रकृति के पाँच तत्वों के बंधन में आ जाते हैं, वो कल्याणकारी नहीं हो सकते। हाँ, सात्विक प्रकृति के बंधन में हैं तो आत्मिक स्थिति में रह सकते हैं; जैसे- देवताएँ। तो प्रकृति के बंधन से पुरुषार्थ करके परे होने वाला। जैसे बाप है लौकिक दुनिया में भी, धन

कमाता है तो करोड़पति/अरबपति/धनवान बनता है, फिर अपने बच्चों को कौन-सा वर्सा देता है? धन का वर्सा देता है। अगर मल्टीमिलियनायर है तो मल्टीमिलों का वर्सा देगा। कमाया तो होगा ना! (किसी ने कहा- होगा) लायक है तो कमाया होगा और नालायक है तो न खुद कमाएगा और अगर बाप-दादे से कमाया हुआ मिल भी गया, तो उसको बरबाद कर देगा। ऐसे ही है ना! तो जो सुख का वर्सा देने वाला है, वो खुद सबसे जास्ती सुख भोगने वाला होना चाहिए; इसीलिए टाइटिल दिया है- भाग्यशाली रथ। किसे कहा जाए भाग्यशाली रथ- दुखी होने वाले को या सुख अनुभव करने वाले को? भाग्यशाली किसे कहा जाए? जो अपने जीवन में सबसे जास्ती सुख का अनुभव करे, संतुष्टि का अनुभव करे, ऐश्वर्य का अनुभव करे।

ऐश्वर्य देने वाला ईश्वर ही कहा जाता है। ईश्वर का मतलब ही है- 'ईश' माने शासन करना, 'वर' माने श्रेष्ठ। कैसा शासन करने वाला? (सभी ने कहा- श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ) तो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ शासन करने वाला ज्ञान का अखूट भंडार शिव है, जो जिस तन में भी आता है उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता है; और ब्रह्मा के द्वारा प्यार-ही-प्यार देता है कि कभी मार भी देता है? प्यार ही देता है; इसीलिए सुख का सागर कहा जाता है। सुख का सागर ज्ञान के आधार पर है या धन-सम्पति देता है? ज्ञान के आधार पर सुख का सागर है; परंतु उस सुख के सागर की जो प्रॉपर्टी है, कौन-सी प्रॉपर्टी? (सभी ने कहा-ज्ञान-धन की) उस ज्ञान-धन की जो बच्चे नम्बरवार कदर करते हैं, वो बच्चे मनुष्य-सृष्टि के बाप को पहचान जाते हैं, जो मनुष्य-सृष्टि का बाप इस मनुष्य-सृष्टि में स्वर्ग में भी रहता है तो वहाँ भी अखूट सुख भोगता है और नरक की दुनिया में भी आता है तो वहाँ भी अखूट सुख भोगता है। ये उन बच्चों की बात है जो पुरुषार्थी जीवन में बाप शिव के आने पर इस दुनिया में ही आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाते हैं, देहभान त्याग देते हैं। उन आत्मिक स्थिति में रहने वाले बच्चों के लिए बोला है- वो हैं सूर्यवंशी बच्चे, ज्ञान-सूर्य के डायरैक्ट बच्चे; लेकिन नम्बरवार। उन नम्बरवार बच्चों में जो ज्ञान-सूर्य का पूरा ज्ञान का प्रकाश हप करता है, वो बड़ा बच्चा कहा जाता है, ब्रह्मा का बड़ा पुत्र 'ज्ञानेश्वर' और 'योगीश्वर' कहा जाता है, जिसके द्वारा सत्य सनातन धर्म की स्थापना होती है। सनतकुमार की रचना सनातन (धर्म है)। तो 'सनातन' माने पुराने-ते-पुराना, दुनिया का ऊँचे-ते-ऊँचा धर्म है। मुसलमान लोग भी गाते हैं- अल्लाह अव्वलदीन; अल्लाह ने आ करके अव्वल नम्बर धर्म की स्थापना की।

तो उस स्थापना में अल्लाह का प्रैक्टिकल रूप क्या हुआ, जिसे त्रिमूर्ति के चित्र में समझाने के लिए बोला है? कौन-सा वो चित्र है? (किसी ने कहा- शंकर) शंकर! वो कहते हैं जो खड़ा हुआ रूप है- विष्णु। विष्णु तो देवता है। शंकर भी देवता है। देवता बनता है तो स्वयं बनता है या कोई बनाने वाला है? कौन है? (किसी ने कहा- परमब्रह्म/शिवबाप) परमब्रह्म वो कहता है- मन्मनाभव-मेरे मन में समा जा। शिवबाप को तो मन ही नहीं है, वो कैसे कहेगा- मेरे मन में समा जा? तो जो कहता है- मेरे मन में समा जा, ज़रूर उसका मन सम्पन्न स्टेज में होगा तब ही कहेगा या चंचल मन होगा तब कहेगा? (किसी ने कहा- सम्पन्न) सम्पन्न मन बने- एक सेकेंड में निराकारी, एक सेकेंड में आकारी, एक सेकेंड में साकारी। एक सेकेंड में अगर निराकारी, निःसंकल्पी स्टेज बन गई, तो उस सेकेंड के लिए कहा जाएगा- सम्पन्न स्टेज;

लेकिन सम्पन्न सिर्फ़ एक सेकेंड/एक मिनट/एक घंटे का नहीं होता है; उसे सत्य नहीं कहेंगे। जो सत्य है, वो सदा अडिग है या डिगने वाला है? सदा अडिग है, अडोल है, अचल है। तो यादगार है, माउंट आबू में। यादगार बताई, अचलगढ़ । 'गढ़' माने किला। कैसा किला? अचल, उसे कोई चलायमान कर नहीं सकता; और उससे भी ऊँचा कोई है? अचलगढ़ से भी ऊँचा कोई है? (किसी ने कहा- गुरुशिखर) हाँ, जो अचलगढ़ संगठन का किला बनाने वाला है, उसका भी कोई गुरु है। कौन है? शिवबाप। गुरु का काम है- गौरव दिलाना, सद्गति करना; लेकिन वो गुरु जो है, आत्माओं का बाप है ना! तो किसकी सद्गति करेगा- पहले देह की सद्गति करेगा या आत्मा की सद्गति करेगा? (किसी ने कहा- आत्मा की सद्गति) आत्मा माने मन-बुद्धि, तो ज्ञान देकर मन-बुद्धि रूपी आत्मा की सद्गति करता है। गीता-ज्ञान देता है। उस गीता-ज्ञान के बारे में बोलता है कि इसे गीता-ज्ञान अमृत नहीं कहेंगे; "गीता को ज्ञानामृत कहना भी राँग है।" (मु.ता. 6.3.67 पृ.2 आदि) सिर्फ़ गीता-ज्ञान है, अमृत नहीं है जिसे पीकर देवता बन जाएँ, अमर बन जाएँ। तो अमृत कैसे बनता है? (किसी ने कहा- मंथन करने से) मंथन करेंगे तो अमृत बनेगा/सार बनेगा। जैसे दूध/दही का मंथन करते हैं तो सार निकलता है- मक्खन, ऐसे ही जो ईश्वरीय ज्ञान का मनन-चिंतन-मंथन करेगा, उसको प्राप्ति होगी; ''अपनी घोट तो नशा चढ़े।'' इसलिए बोला- मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार। "मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार।" (अ.वा.18.1.07 पृ.5 मध्य)

प्यार की निशानी क्या है? जिससे प्यार होता है, वो लगातार मन में घूमता रहता है। माँ को बच्चे से प्यार होता है; बच्चा घर से बाहर भी चला जाता है, स्कूल में पढ़ने चला जाता है, तो भी माँ की बुद्धि में बच्चा आलोड़न करता रहता है। तो ये प्यार की निशानी है। मुरली से प्यार माना मुरली की जो बातें हैं (उनका मंथन ज़रूर करेगा)। जैसे बच्चे से प्यार तो माता को बच्चे की बातें याद आती हैं, ऐसे ही जो शिव से प्यार करने वाला है, वो मन में शिव की वाणी का मंथन ज़रूर करेगा- बाबा ने ऐसे बोला, बाबा ने ऐसे बोला, इसका ये अर्थ हुआ, इसका ये मतलब हुआ। सारी बात बुद्धि में चलती रहें, एक के अलावा और किसी के बोल कान के अंदर न पड़े, मन के अंदर न घूमें; एक का ही रूप समाया हुआ रहे।

तो जिसको याद करेंगे, क्या निकलेगा? वैसे ही बन जाएँगे; लेकिन वो तो बिंदु है। आत्माओं के बाप का नाम 'शिव' है, उस बिन्दी का नाम 'शिव' है; तो बिन्दु को याद करते रहें, तो बिन्दु को याद करने से मनन-चिंतन-मंथन चलेगा? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों नहीं चलेगा? बिन्दु को याद करेंगे तो हमारी बुद्धि भी सूक्ष्म बिन्दु-जैसी बनेगी और बुद्धि सूक्ष्म बनेगी तो मनन-चिंतन-मंथन ज़्यादा नहीं होगा? होगा तो; लेकिन जिस बिन्दु का हम मनन-चिंतन-मंथन करते हैं, वो बिन्दु तो 5 हज़ार साल परमधाम में जड़वत् पड़ा रहता है। आत्मा चैतन्य होती है क्या? (सभी ने कहा-नहीं) तो वो ज्योतिबिन्दु, जो जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है, जिस तन में प्रवेश करता है, तो प्रवृत्ति में होता है। संसार काहे से बनता है- निवृत्ति से या प्रवृत्ति से? प्रवृत्ति से संसार बनता है; लेकिन व्यभिचारी प्रवृत्ति से दुख का संसार बनता है और सुख का संसार अव्यभिचारी प्रवृत्ति से बनता है। इसीलिए बाप कहते हैं- एक से ज्ञान सुनना चाहिए। एक के अलावा, अनेकों से ज्ञान सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। "मुझ एक से ही सुनो। अव्यभिचारी ज्ञान एक बाप ही

देते हैं।" (मु.ता. 12.2.69 पृ.2 आदि) एक से सुनना चाहिए और यह भी नियम है कि आँखें जिसको देखती हैं, उसकी याद आती है। तो हमारी आँखें एक को ही देखें, और किसी में आँख डूबे ही नहीं और वो एक श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ होना चाहिए। (किसी ने कहा- मन-बुद्धि के आधार पर)

तो ढूँढ़ने से मिल जाएगा क्या? 63 जन्मों, 2500 वर्षों से पुरुषार्थ किया भगवान को ढूँढ़ने का, मिल गया? (किसी ने कहा- नहीं मिल गया) तो क्या करें जो मिल जाए? तो ज्ञान का वर्सा आत्मा को परमपिता परमात्मा से मिलता है , उस गीता-ज्ञान के लिए बाप बोलते हैं कि एक मुरली 6 बार पढ़नी चाहिए, तब ही बुद्धि में बैठेगी। "मुरली बच्चों को 5-6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए, तब ही बुद्धि में बैठेगी।" (मु.ता.31.8.73 पृ.4 मध्य) तो जितना-2 गीता-ज्ञान का आलोड़न करेंगे, उससे ये फ़ायदा होगा कि निराकार ज्योति परमपिता शिव, आत्माओं का बाप जिस मुकर्रर रथ में प्रवेश करके कार्य कर रहा है, उसकी हमको पहचान हो सकती है और वो पहचान भी हम अपने पुरुषार्थ से नहीं कर सकते। बाप की पहचान, बाप के सिवाय कोई दे ही नहीं सकता। "वह सतगुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं।" (मु.ता. 8.10.68 पृ.2 मध्यादि) ये सिर्फ़ आत्माओं के निराकार बाप की ही बात नहीं है; आत्माओं का बाप जिस मनुष्य-सृष्टि के बाप में मुकर्रर (रूप से) प्रवेश करता है, उसकी भी यही बात है। वो जब तक स्वयं अपने स्वरूप, अपने श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ पार्ट, जो इस सृष्टि रूपी मंच पर वो बजाता है पहले-2 जन्म का पार्ट, उस पार्ट को जब तक न पहचान ले तब तक वो दूसरों को मनुष्य-सृष्टि के बाप का पूरा परिचय नहीं दे सकता। पहले बाप खुद की कमाई करे, फिर बच्चों को वर्सा देगा। कमाई किए बगैर वर्सा दे सकता है क्या? (सभी ने कहा- नहीं दे सकता) तो ऐसे ही है, त्रिमूर्ति के चित्र में एक मूर्ति ऐसी भी है जो स्वयं कमाई करके अपने स्वरूप को पहचानती है; शिवबाप नहीं बताय देते हैं। अगर शिवबाप बतावें, तो शिवबाप पार्शियल/पक्षपाती साबित होगा या नहीं होगा? (किसी ने कुछ कहा-...) नहीं! ये पहचान लेने में भी स्वयं का पुरुषार्थ करना पड़ता है। अपने-2 पार्ट की हर आत्मा स्वयं पहले जानकारी धारण करेगी; दूसरा कोई जानकारी धारण नहीं कर सकता और उसके लिए ज़रूरी है कि आत्माओं के बाप ज्योतिबिन्दु को पहचानने के साथ-2, उसके प्रैक्टिकल रूप को पहचाना जाए कि वो आत्माओं का बाप कौन-से प्रैक्टिकल स्वरूप में प्रवेश करके तीन मूर्तियों का कार्य कराता है- स्थापना, विनाश और पालना।

जो त्रिमूर्ति शिवबाप कहा जाता है, त्रिमूर्ति के चित्र में वो कौन-सा चित्र है जिसको हमें प्रैक्टिकल में याद करना है? और हम सूर्यवंशी बच्चे ही याद नहीं करते, सारा संसार महामृत्यु के समय उस एक ही साकार सो निराकार को याद करेगा। (किसी ने कहा- नारायण) नहीं, नारायण तो सतयुग का 16 कला सम्पूर्ण देवता है। वो ज्ञान-सूर्य है इस सृष्टि पर चैतन्य, कलाओं से परे, 'कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी'। सारी मनुष्य-सृष्टि, विश्व-धर्मों के लोग, धर्मपिताएँ भी, उस निराकार सो साकार को जब तक याद न करें, तब तक कोई की भी मुक्ति-जीवनमुक्ति नहीं हो सकती। वो सद्गुरु का रूप है, सारी मनुष्य-सृष्टि की सद्गति करता है- सिर्फ़ सूर्यवंशियों की नहीं वा चंद्रवंशियों की नहीं, हरेक वंश की आत्मा की सद्गति होती है; लेकिन तभी होगी, जब वो मनुष्य-आत्मा, मनुष्य-सृष्टि के बाप को पहचानेगी; और कब पहचानेगी? अपने-आप तो

बाप का परिचय किसी को मिल नहीं जाता, बाप का परिचय बाप ही आ करके देता है। तो कैसे परिचय मिले? (किसी ने कहा-...ज्ञान के आधार पर) शास्त्रों में ये लिखा है- ''जा पर कृपा राम की होई।'' राम माने भगवान, वो त्रेता वाला राम नहीं। जिस पर उसकी कृपा होती है, उसी को वो ज्ञान मिलता है, पहचान मिलती है; और कृपा किस पर होती है? तुम बच्चों ने सबसे जास्ती भक्ति की है और सबसे पहले सतोप्रधान भक्ति की है; तो जिन्होंने सबसे जास्ती सतोप्रधान/सात्विक भक्ति की है, उन्हीं को ही पहले पहचान की भी प्राप्ति हो जाती है और जब बाप को पहचान लिया/मान लिया/जान लिया, तो वो जैसे चलाए वैसे चलने की बात रह जाती है, आज्ञाकारी-वफ़ादार-फ़रमानबरदार-ईमानदार बनने की बात रह जाती है। अब जो जितना करेंगे उतना पाएँगे।

तो बताया- भारत नरक बन गया। कौन नरक बन गया? भारत- 'भा' माने ज्ञान की रोशनी, 'रत' माने रहने वाला; जो सदा ज्ञान की रोशनी में, मन-वचन-कर्म से जन्म-जन्मांतर उस रोशनी में ही लगा रहता है; वो संग के रंग से पतित भी बन जाता है, नारकी बन जाता है। स्वस्थिति में जाता है तो स्वर्ग और नर/मनुष्य मन की स्थिति में चला जाता है, चंचल मन के कण्ट्रोल में आ जाता है, तो क्या बन जाता है? नारकी बन जाता है। ख़ास मुसलमान लोग ये बात बताते हैं कि अल्लाह मियाँ ने जन्नत बनाई तो आदम-ईव को हिदायत दी- बॉडी के बीच का फल नहीं खाना; लेकिन ईव ने वो हिदायत याद नहीं रखी और आदम को बरगलाया कि ऐसा ही करो, ये जो बॉडी है, इसके बीच का फल खाना ही है और आदम प्रभाव में आ गया। अब हम बच्चे तो जान गए हैं कि राम वाली आत्मा आदम बनती है और कृष्ण वाली आत्मा ईव बनती है। अब कृष्ण वाली आत्मा ईव कहो, चंद्रमा कहो, बैल कहो, घोड़ा कहो, मन कहो, उस मन के प्रभाव में आदम आ जाता है, तो नर बन गया/नरक बनाने वाला बन गया। नर चाहे तो नरक बनाए और नर चाहे तो मनुष्य से देवता बन जाए।

तो देखो, ये जो मन का रूप है ना, ये सभी इन्द्रियों को कण्ट्रोल करने वाला है, पावरफुल है। ये ब्रह्मा की सोल भी इतनी पावरफुल है कि दुनिया के सभी धर्मपिताओं की आत्माएँ इस गोद में खेलती हैं और मनमाना आचरण धारण करती हैं। उस ब्रह्मा का ही दूसरा रूप है- जगदम्बा, जो जगदम्बा, महाकाली का रूप धारण करती है और उस महाकाली के काल के गाल में सारी दुनियाँ समा जाती है; समा जाती है माना 'राज करेगा ख़ालसा'। महामृत्यु के समय तक ऐसा टाइम आता है कि सारी दुनियाँ की मनुष्य-आत्माएँ, मनुष्य-सृष्टि के बाप को छोड़कर, सब महाकाली के प्रभाव में आ जाती हैं। महाकाली माना प्रकृति-पाँच तत्वों का संघात। प्रकृति में मूल तत्व है- पृथ्वी। पृथ्वी माना पृथिव्याति; जो विस्तार को पाती है वो है पृथ्वी। जैसे- शरीर है, पहले छोटा होता है, फिर बड़ा होता है। तो शरीर की पाँच तत्वों की प्रकृति है, ऐसे ही वो प्रकृति पहली-2 माता भी कही जाती है; परन्तु जड़त्वमयी माता है या चैतन्य बुद्धि वाली है? जड़त्वमयी है; इसीलिए नाश करने वाली है। पाँच तत्वों से बना हुआ शरीर प्रकृति का पुतला है और उस पुतले को चलाने वाली चैतन्य आत्मा है, दो चीज़ें हैं; इसीलिए कहा जाता है- नारायण और महानारायण माना नर से नारायण बनने वाली राम वाली आत्मा और नर से प्रिंस बनकर (फिर) नारायण बनने वाली सतयुग की

आत्मा, वो भी नारायण है; परंतु ब्रह्मा के रूप में विख्यात होने पर अंत तक इतने देहभान में रहती है कि भगवान बाप को पहचानती ही नहीं। जैसे ब्रह्मा (दाढ़ी-मूँछ वाला) भगवान बाप को नहीं पहचानता, ऐसे ही महाकाली/जगदम्बा भी भगवान बाप के रूप को भूल जाती है/विस्मृति हो जाती है; इसीलिए बाप कहते हैं- बाप के साथ रहने वाले बाप को नहीं जानते। "मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ रहने वाले भी समझ नहीं सकते हैं।" (मु.ता. 5.2.68 पृ.3 अंत) तो राम बाप के साथ सबसे जास्ती कौन रहता है? जगदम्बा। इतना लम्बे समय तक रहने के बावजूद भी बाप को भूल गई, तो जड़त्वमयी बुद्धि कहें या चैतन्य बुद्धि कहें? जड़त्वमयी बुद्धि हुई। तो वो प्रकृति का चैतन्य रूप हुआ। कौन? ब्रह्मा कहो या जगदम्बा कहो, ईव कहो/हव्वा कहो।

बताया- वो भी रचना है, प्रकृति भी रचना है और माया बेटी भी रचना है। प्रकृति-पति कहा जाता है, माया-पति कहा जाता है, तो उनका रचयिता कौन हुआ? मनुष्य-सृष्टि का बाप हुआ। शिवबाप तो माया नहीं रचते। शिवबाप तो पाँच तत्वों से सदैव परे है। तो त्रिमूर्ति के चित्र में ऐसा रूप कौन-सा है, जो साकार भी है और निराकार भी है; आँखों से देखने योग्य व्यक्त भी है और आँखों से न देखने वाला रूप अव्यक्त अर्थात् निराकारी रूप भी उसमें है? त्रिमूर्ति में वो चित्र कौन-सा है? (किसी ने कहा- शंकर) शंकर! शंकर तो याद में बैठा है। याद में बैठा है तो अधूरा है या सम्पूर्ण है? अधूरा है। (किसी ने कहा- परमब्रह्म) परमब्रह्म कौन है त्रिमूर्ति में? ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत कहा है, उसके दुनिया में सबसे जास्ती मंदिर बनते हैं, उसकी सबसे जास्ती खुदाइयों में मूर्तियाँ मिली हैं। (किसी ने कहा- शिवलिंग) हाँ, शिवलिंग। उस शिवलिंग में, जो त्रिमूर्ति के साथ दिखाया है, उसमें जो लिंग है, वो बड़ा रूप है या छोटा रूप है? (किसी ने कहा- बड़ा रूप) तो साकार हुआ या निराकार? (सभी ने कहा- साकार) और जो साकार रूप हुआ, उसे अव्यक्त कहेंगे या व्यक्त? वो व्यक्त रूप है, आँखों से देखने योग्य है; लेकिन फिर अव्यक्त भी है; इसीलिए गीता में बोला है- ''अव्यक्तमूर्तिना'' (9/4)- उस अव्यक्तमूर्ति के द्वारा ये सारा संसार विस्तार को पाता है और महामृत्यु के समय ये सारा संसार उसी अव्यक्त-मूर्ति में समा जाता है। समाएगा तो तब, जब उस याद में रहेगा। याद में ही समाना होता है/लीन होना कहा जाता है; इसलिए भक्तिमार्ग में क्या कहते हैं? आत्मा, परमात्मा में लीन हो गई; क्योंकि वो 'परमात्मा' टाइटिलधारी, परम+आत्मा, आत्माओं के बीच में बड़ा हीरो पार्ट धारण करने वाला, वो आदेश देता है- मन्मनाभव, मेरे मन में समा जा; अर्थात् मेरे मन में क्या है? (किसी ने कहा- एकमात्र शिव ज्योतिबिंदु) वो जो शिवलिंग है, पहले तो ये समझना है- वो लिंग अव्यक्त कैसे है? अव्यक्त इसीलिए है कि उसको हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान हैं ही नहीं। हैं? हैं तो; लेकिन वो आत्मा याद की इतनी गहराइयों में समाई हुई है कि इन्द्रियों की याद है ही नहीं; इन्द्रियों की स्मृति से परे हो जाती है और इन्द्रियों की स्मृति से परे हो गई तो इन्द्रियों का रस लेगी? (किसी ने कहा-नहीं); इसलिए वो अव्यक्त-मूर्ति कही जाती है।

इसीलिए बाबा ने बताया- साकार में निराकार को याद करो। "विचित्र (निराकार) के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जाएँगे। अगर सिर्फ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आए।" (अ.वा.ता.18.1.70 पृ.166) साकार लिंग-

रूप, जिस लिंग-रूप आत्मा में हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान हैं ही नहीं अर्थात् विस्मृति हो गई और वो आत्मा ज्योतिबिन्दु-स्वरूप में टिक जाती है याद की प्रैक्टिस करते-2; कि ज्ञान मिलते ही टिक जाती है? (किसी ने कहा- प्रैक्टिस करके) हथेली पर आम जमाया जा सकता है क्या? नहीं जमाया जा सकता ना! तो ऐसे ही, जो आत्मा इस मनुष्य-सृष्टि का हीरो पार्टधारी है, ऐसा पुरुषार्थ करके वो लिंग-रूप धारण करता है जिसकी मंदिरों में पूजा होती है। पूजा किसकी होती है- पूज्य की पूजा होती है या जो कभी पूज्य बनता ही नहीं, उसकी पूजा होती है? (किसी ने कहा-पूज्य की) बाप तो कहते हैं- तुम बच्चे ही पूज्य बनते हो, तुम बच्चे ही पुजारी बनते हो। न मैं पूज्य बनता हूँ और न मैं पुजारी बनता हूँ। "तुम ही पूज्य बनते हो, पुजारी भी बनते हो। ... न मैं पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ।" (मु.ता. 22.5.71 पृ.1 अंत, 2 मध्यांत)

तो ये शिवलिंग, जिसकी पूजा होती है, वो बच्चों में से कोई बच्चा है या शिवबाप है? बच्चों में ही कोई बच्चा है, जो त्रिमूर्ति में भी ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है और इस सृष्टि में आदि से ले करके अंत तक हीरो पार्टधारी है। उसके लिए बोला कि न निराकार को याद करना है, न साकार को याद करना है, न आकारी भूत-प्रेत को याद करना है। "बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र हों उनको तुम्हें याद नहीं करना है।" (मु.ता.2.3.78 पृ.2 मध्य) किसको याद करना है? जो साकार लिंग में निराकार ज्योतिबिन्दु-स्वरूप धारण कर लेता है, उसको याद करना है। बाकी शिव को धारण करने की तो बात है ही नहीं, वो तो सदा ही बिंदु-रूप है। वो शिव पुरुषार्थ करके बिंदु-रूप में आता है क्या? (सभी ने कहा-नहीं)

इस रहस्य को दुनिया के कोई धर्मपिता, विद्वान नहीं जान पाए। शंकराचार्य भी, जो दुनिया के सबसे बड़े ज्ञानी माने जाते हैं, सारे भारतवर्ष में भी उनके ज्ञान का सिक्का बैठा हुआ है, जिन्होंने भगवान को सर्वव्यापी कह दिया, आत्मा सो परमात्मा कह दिया और उल्टा अर्थ लगा दिया कि हर आत्मा, परमात्मा का रूप है, उन्होंने भी इस राज़ को नहीं जाना कि मंदिरों में शिव की जो लिंग (रूप में) पूजा होती है, वो शिवलिंग क्या है- जन्म-मरण के चक्र में आने वाली आत्मा है या आत्माओं का बाप है जो जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता? वो शिवलिंग क्या है- भोगी आत्मा है या आत्माओं का बाप अभोक्ता है? भोगी आत्मा है, जिस भोगी आत्मा ने आत्माओं के बाप को पहचाना कि वो ज्ञान का अखूट भंडार है; कैसा अखूट भंडार? ''पूर्णमिदं पूर्णमदः पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।'' वो सुप्रीम सोल जो आत्माओं का बाप है, उसमें से पूरा ही ज्ञान निकाल लो, तो भी पूरा बचता है, वो कभी खूटता ही नहीं; और जो मनुष्यों का बाप है, वो खूटता है या नहीं खूटता है? वो खूट जाता है, संग के रंग में आ करके अज्ञानियों-जैसा बन जाता है, अज्ञानियों से भी बदतर। उसी के संपन्न पुरुषार्थी रूप का गायन है, उसी का पूजन है, जो गाया जाता है, बनाया जाता है- स्वर्णलिंग, रजतलिंग- चाँदी का, ताम्रलिंग- कॉपर का और लौहलिंग, पत्थरलिंग। क्यों? इसीलिए बनाया जाता है कि वह भोगी आत्मा भी चार अवस्थाओं से पसार होती है; परमपिता शिव चार अवस्थाओं से पसार नहीं होता।

आजकल की दुनिया में जो शिवलिंग हर जगह मंदिरों में पत्थर का दिखाई देता है। इसका मतलब क्या बन गया? पत्थरबुद्धि बन जाता है; इसीलिए पत्थर के लिंग की पूजा करते हैं। द्वापर के आदि

में सोमनाथ मंदिर में लिंग में हीरा जड़ा हुआ था। वो हीरा किसकी यादगार है? सोमनाथ मंदिर में गोल लाल पत्थर में जो हीरा जड़ा हुआ था, वो किसकी यादगार- शिव के बच्चों की यादगार या शिव के किसी एक बच्चे की यादगार? (किसी ने कहा- एक बच्चे की यादगार) शिव के जो भी आत्मा रूपी बच्चे हैं, उन बच्चों में मनुष्य-आत्माएँ श्रेष्ठ और उन मनुष्य-आत्माओं के बीच में जो मनुष्यों का बाप है, सब मनुष्यों का जन्मदाता, जिसके लिए गीता में बोला कि मेरी अव्यक्तमूर्ति के द्वारा ये सारा संसार विस्तार को पाता है; इस सारे संसार रूपी वृक्ष में जो भी तना है, जड़ें हैं, पत्ते हैं, फल हैं, फूल हैं, मैं उनमें व्याप्त नहीं हूँ; परंतु वो सब मेरे अंदर हैं; जैसे- बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ होता है, ''न अहम् तेषु ते मयि'' (गीता 7/12)- मैं उनमें नहीं हूँ; लेकिन वो मेरे में हैं और शंकराचार्य ने उल्टा कर दिया- सब आत्माओं में कौन है? परमात्मा निवास करता है। तो देखो, ये दुनिया में जितने भी द्वापरयुग से लेकर संगम में भी देहधारी धर्मगुरु, धर्मपिताएँ हुए, ब्रह्मा की गोद में खेलते हैं। ब्रह्मा नामधारी सहित, जो ब्रह्मा, ब्राह्मण धर्म की स्थापना करता है, वहाँ से लेकर सारे ही कलियुग के अंत तक आने वाले धर्मपिताएँ उस साकार को नहीं पहचानते हैं, जिस साकार के मुकर्रर रथ में परमपिता शिव प्रवेश करते हैं; क्योंकि उन धर्मपिताओं का जो विशेष रहमकर्ता है, वो ब्रह्मा भी उस आत्माओं के बाप, भगवान बाप निराकार को प्रैक्टिकल रूप में नहीं पहचान पाता; इसीलिए उसकी गोद में खेलने वाले जो भी धर्मपिताएँ और उनके फॉलोअर्स की 500/700 करोड़ आत्माएँ हैं, जो सारी दुनियाँ ब्रह्मा के बच्चे तो कहलाती है; परन्तु ब्रह्मा-मुखवंशावली बच्चे नहीं कहे जाते; कुखवंशावली कहे जाते- गोद का बहुत प्यार लिया, बहुत मान्यता दी; ब्रह्मा के मुख से जो भगवान के वाक्य निकले, उन वाक्यों पर उतना मनन-चिंतन-मंथन, प्यार ही नहीं किया; इसलिए वो धर्मपिताएँ भी साकार की पहचान से महरूम रह जाते हैं और जो स्वर्ग की प्राप्ति करना है, वो प्राप्ति नहीं कर पाते।

आत्माओं का बाप शिव आकर कहते हैं कि मैं, जो भारत नर्क बन गया है, उसको स्वर्ग बनाता हूँ, देवी-देवताओं का राज्य बनाता हूँ। कौन बनाता है? (किसी ने कहा- सदा स्वस्थिति में रहने वाला) सदा स्वस्थिति में रहने वाला स्वर्ग बनाता है? बनाने वाला रचयिता होता है। रचयिता साकार होता है और रचना भी साकार होती है। स्वर्ग साकार, स्वर्ग का रचयिता भी साकार; और शिव? (किसी ने कहा- निराकार) वो तो रचयिता नहीं है। रचयिता कौन है? रचयिता वो है, जो अपना पुरुषार्थ करके शिव समान स्थिति को धारण करता है और शिवलिंग के रूप में पूजा जाता है; इसलिए शिवबाप कहते हैं- मैं न पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ। तुम पूज्य बनते हो, तो तुम पुजारी भी बनते हो। "तुम ही पूज्य बनते हो, पुजारी भी बनते हो। ... न मैं पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ।" (मु.ता. 22.5.73 पृ.2 अंत) पूज्य किस रूप में बने? नम्बरवन जिस रूप में पूज्य बनता है, वो रूप है- शिवलिंग और फिर ये भी कहते हैं- तुम बच्चों की डबल पूजा होती है। "पूजा भी तुम्हारी डबल होती है।" (मु.ता. 26.07.67 पृ.3 अंत) कैसे डबल पूजा? निराकारी रूप में भी पूजा और साकारी रूप में भी पूजा। निराकारी रूप में शिवलिंग और साकारी रूप में मूर्ति की पूजा होती है। शंकर की मूर्ति की पूजा होती है या नहीं? होती है। इसी तरह कृष्ण वाली आत्मा, जो 16 कला सम्पूर्ण नारायण बनती है, उसकी पूजा निराकार शालीग्राम के रूप में भी होती है और साकार रूप में- नारायण के रूप में भी, कृष्ण के रूप में भी पूजा होती है।

बाप आ करके बैठकर समझाते हैं, ये समझानी देते हैं कि मुझे याद करो; यह कौन-सी आत्मा कहती है? कौन-सी आत्मा है, जो कहती है- मुझे याद करो? शिवबाबा; शिवबाप नहीं। (किसी ने कहा- शिवबाबा) हाँ! मुझे याद करो तो विषियस से वाइसलेस बन जाएँगे अर्थात् सतोप्रधान बन जावेंगे। दिल में बैठ करके अच्छी तरह से ये बात घोंटो कि अब हमको बहुत टाइम वेस्ट नहीं करना है। अभी तक न पहचानने के कारण क्या किया? बहुत टाइम वेस्ट हो गया; इसलिए बाबा मुरली में डुरापा देते हैं- कोई मम्मा के मुरीद, कोई बाबा के मुरीद, शिवबाबा को कोई पूछता ही नहीं। "अब तुमको शिवबाबा के मुरीद बनना है। कोई भी देहधारियों का मुरीद नहीं बनना है।" (मु.18.3.69 पृ.3 मध्यांत) भक्तिमार्ग में भी हम गाते रहे- ''राम के भक्त, रहीम के बन्दे, हैं सब आँखों के अंधे।"

मानवी सृष्टि-वृक्ष के जो भी नए-2 पत्ते आते हैं या नई-2 आत्माएँ ज्ञान में आती हैं, पहले-2 सतोप्रधान होने के कारण शोभनीक पार्ट बजाते हैं, बड़े अच्छे लगते हैं। ठक से पहले उन्हें ये बात समझाओ। बच्चे तो समझते हैं कि ये सीढ़ी निकली है, हम सीढ़ी समझाएँगे। कभी कोई सीढ़ी नहीं समझ सकेगा जब तलक ये पहली बात नहीं समझी है। कौन-सी पहली बात? कि त्रिमूर्ति के चित्र में पहले बाप का परिचय दो। कौन-से बाप का परिचय? ब्रह्माकुमारियाँ भी ऐसे ही करती हैं। मेला करेंगे, प्रदर्शनी करेंगे, कौन-सा चित्र पहले सामने रखते हैं? 32 किरणों वाला शिवलिंग। रखते हैं ना! चित्र तो सामने रख दिया; लेकिन क्या पता पड़ता है उनको कि वो बाप कौन है, जिससे जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है? जीवन में रहते-2 सुख-शांति का वर्सा मिले, दुख से 2500 वर्षों के लिए छूट जाएँ- ऐसा स्वर्ग का वर्सा देने वाला वो बाप कौन है? (सभी ने कहा- साकार) साकार बाप कौन है, जिस साकार बाप में आकर वो निराकार आत्माओं का बाप निराकारी ज्ञान का वर्सा देते हैं; स्वर्ग का साकार वर्सा नहीं देते। किसी को मिला? अरे, 78-80 साल हो गए, आत्माओं के बाप को तो पहचान लिया ना! हम आत्मा बिन्दु, हमारा बाप भी ज्योतिबिन्दु; कहाँ का रहने वाला? परमधाम का रहने वाला। परिचय तो मिला हुआ है? (किसी ने कुछ कहा-...) फिर? बाप से जो वर्सा तुमको चाहिए, वो वर्सा मिल गया? भक्तिमार्ग में बाप को बुलाते हैं। क्या बुलाते हैं? हे भगवान, आओ! आ करके हमको ज्ञान दिओ! कोई कहता है? हमें ज्ञान का वर्सा दो- कोई कहता है? नहीं कहता। तो काहे के वर्से की बात है? अरे! हर आत्मा क्या चाहती है? हर आत्मा चाहती है- हमें सुख मिले; दुख न मिले। ऐसा तो कोई नहीं चाहता कि हमारी आत्मा सदाकाल के लिए शांतिधाम में पड़ी रहे, हम कभी भी इस सृष्टि पर आएँ ही नहीं, हमारी आत्मा का अस्तित्व ही इस दुनिया में लोप हो जाए। कोई चाहता है? ऐसा तो कोई नहीं चाहता। अगर चाहते भी हैं तो वो आत्माएँ चाहती हैं, जो बहुत दुखी हो जाती हैं, तो मजबूरी में आ करके ये बोलती हैं- ''हे भगवान! इस दुनिया से हमको सदा के लिए उठा लो, हम कभी (भी) इस दुनिया में आएँगे ही नहीं;'' लेकिन ये बात तो ऐसे ही है जैसे किसी को गहरा बुखार आ जाता है, उसको लड्डू-पेड़ा दो, रस्सगुल्ला दो तो खाएगा? नहीं खाएगा। वो क्या चाहता है? वो पहले शांति चाहता है, दुख से छुटकारा चाहता है, जो नस-2 में दर्द हो रहा है उस दुख से छुटकारा चाहता है और फिर जब बुखार उतर जाता है, तो सुख चाहता है।

तो यही हालत संन्यासियों की भी है। जिनके लिए शिवबाबा ने बोला है- ये संन्यासी कुत्ते की मौत मरेंगे। क्या बोला! कुत्ता सड़क में मरता है तो उसके मुँह में कोई पानी डालने वाला नहीं होता। इनको लोग बिल्कुल कोई मान-मर्तबा नहीं देंगे, समझ जाएँगे कि इन्होंने ही संसार को डुबोया है। क्या कह करके? आत्मा सो परमात्मा, भगवान सर्वव्यापी है। अगर ये बात इन्होंने न सिखाई होती/सुनाई होती/समझाई होती, तो सारी दुनिया एकव्यापी भगवान को पहचानने के लिए प्रयत्न करती। भगवान तो बाप है; बाप सर्वव्यापी कैसे हो सकता है?

भले सीढ़ी तुम किसको भी दो, घर-2 में सीढ़ी का चित्र रख दो; लेकिन धूल भी नहीं समझेंगे। कब तक? जब तलक पहले ये त्रिमूर्ति के चित्र के ऊपर नहीं समझाया है। कई दिनों से मुरली में यही त्रिमूर्ति के चित्र के ऊपर समझाने की बात करते रहे। क्या समझाना है त्रिमूर्ति पर? कि ऊँचा-ते-ऊँचा भगवन्त कौन है। जो साकार शरीर रहते भी, साकार शरीर की कर्मेन्द्रियों/ज्ञानेन्द्रियों को भूल जाता है और एक बाप के रूप की स्मृति में समा जाता है, बिन्दु-रूप बन जाता है; इन्द्रियाँ जैसे हैं ही नहीं। जैसे कहते हैं ना- आँखें हैं, परन्तु देखा ही नहीं; कान है, लेकिन सुना ही नहीं। ''बिनु पग चलै, सुने बिनु काना, कर बिनु कर्म, करै विधि नाना। आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्ता वड़ योगी।।'' कैसे? आँखें हैं माना जो लिंग-रूप दिखाया है, वो साकार है ना! तो उसको आँखें तो होंगी ना! आँखें हैं, लेकिन आँखें कोई के रूप में डूबती नहीं हैं, जैसे देखते हुए भी नहीं देखता; कान हैं, लेकिन कान (से) दुनिया की ग्लानि (नहीं) सुनी जा रही है। उसको कलंकीधर अवतार गाया हुआ है, सारी दुनियाँ ग्लानि करती है; लेकिन ग्लानि सुनते हुए भी कान जैसे सुनते ही नहीं, कोई असर नहीं पड़ता। तो ऐसे ही सभी इन्द्रियों की बात है, सभी इन्द्रियाँ अपने-2 टाइम पर भले काम करें; लेकिन उन इन्द्रियों के रस में कभी नहीं डूबें, कोई असर न पड़े। तो इस संसार में वो ऐसा रूप है, जन्म-मरण के चक्र में आने वाली (ऐसी) आत्मा (है), जो किसी के संग के रंग में नहीं आती। बाकी तो, चाहे ब्रह्मा हो, विष्णु हो, चाहे इब्राहीम हो, बुद्ध हो, क्राइस्ट हो, कोई भी महान-ते-महान धर्मपिता हो, इस दुनिया में सब संग के रंग में आ करके डूब जाते हैं; वो एक ही परम पुरुषार्थी रूप है और वो भी संगमयुग में है, उसी का कार्य है कि साकार शरीर होते हुए भी, साकार ज्ञानेन्द्रियाँ-कर्मेन्द्रियाँ- दोनों होते हुए भी, दोनों से काम करते हुए भी उनके संग के रंग में आता नहीं, किसी का प्रभाव पड़ता नहीं। तो क्या होता है? वो अपना संग का रंग लगाएगा या दूसरों के संग के रंग में आएगा? अपना संग का रंग लगाएगा, दूसरों के संग के रंग में नहीं आएगा।

तो बस, कोई भी चीज़ बच्चे देखते हैं, तो सीधे समझते हैं। ये सीढ़ी अच्छी है; परन्तु पहले-2 जब तलक वो बात नहीं समझाई है- अव्यक्त-निराकार रूप की, साकार में निराकारी स्टेज बनाने वाले की, तब तक सीढ़ी से भी समझेंगे नहीं। साकार है और उस साकार में निराकार; निराकार वो नहीं जो आत्माओं का बाप है, जिसकी बिन्दी का ही नाम 'शिव' है! वो निराकार, जो पुरुषार्थ करके निराकार ज्योतिबिन्दु बना है, जिसकी यादगार सोमनाथ मंदिर में हीरा दिखाया गया। हीरा पत्थर होता है या नहीं होता है? पत्थर होता

है। तो वो ऊपर वाला पत्थर बनता है कभी? (किसी ने कहा- नहीं) तो किसकी बात है? वो हीरा उस साकार की बात है, जो पुरुषार्थ करके उस शिव के समान निराकारी बन जाता है।

बेहद का साकारी बाप देते हैं ये समझानी। फिर 84 जन्म तो वो बाप को भी उतरना ही है /मनुष्य-सृष्टि के बाप को भी 84 जन्मों में नीचे उतरना है। उस बाप की ये 84 के चक्र की सीढ़ी समझानी है। भले इस सीढ़ी के बाजू में त्रिमूर्ति का चित्र रख दो। बाबा ऐसे थोड़े ही कहते हैं कि नहीं रखो; परंतु समझाओ कि शिवबाबा, बाबा तो है ना! बाबा माने साकार। बाबा, ग्राण्ड फ़ादर को कहा जाता है। शिव तो आत्माओं का सिर्फ़ बाप है, ग्राण्ड फ़ादर वगैरह कोई दूसरा सम्बंध है ही नहीं। तो बाबा तो बाबा है ना! इसको कहेगा तो शिवबाबा ना, ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त! क्रियेटर है ना! ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त किस आधार पर? क्रियेट करता है। क्रियेट किया ना! रचता को हमेशा 'बाबा' कहा जाता है।

तो देखो, ये लोग जो बड़े-2 होते हैं बाप- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, ये सब क्या हैं? अपने धर्म के रचयिता हैं, धर्म के फॉलोअर्स के रचयिता हैं। क्रियेटर हैं ना! और इन सबका क्रियेटर है बेहद का बाप। कौन? बेहद का क्रियेटर बाप एक है; ये अनेक नहीं हैं, ये अनेक तो उसके बच्चे हैं। कौन? इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक आदि। सबको वर्सा मिलना है एक क्रियेटर बाप से। माने इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट को भी वर्सा किससे मिलेगा- आत्माओं के निराकार बाप से या मनुष्यों के साकार बाप से वर्सा मिलेगा? मनुष्यों के साकार बाप से वर्सा मिलता है और सबको वर्सा मिलता है। निराकार बाप शिव जिसको आप समान निराकार बनाते हैं, उससे तो स्वर्ग का वर्सा मिलता है। मिलता है ना! स्वस्थिति में स्थित होने वाले से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। फिर वो स्वस्थिति में स्थित होने वाला, कभी देह की स्थिति में नीचे उतरकर स्थित होता है या नहीं होता है? (किसी ने कहा- होता है) तो जब वो नीचे देह की स्थिति में स्थित होता है, तो दैहिक वर्सा धर्मपिताओं को मिलता है और वो वर्सा है ही हिंसक राजाई का। और धर्मों में भी तो राजाई होती है ना! वो धर्मपिताएँ आकर धर्म स्थापन करते हैं; राजाई स्थापन नहीं करते और ये बाप पुरुषार्थ करके एक ही जीवन में राजाई स्थापन करता है। तो इसमें ताकत है, राज्य की स्थापना भी उन-2 धर्मों में ये मनुष्य-सृष्टि का बाप ही जा करके करता है। उन धर्मपिताओं में ताकत नहीं है कि वो राजाई स्थापन कर सकें; क्योंकि उन्होंने राजयोग सीखा ही नहीं। तो सभी ब्रदर्स को बाप से वर्सा मिलना है। जो सभी मनुष्य 500/700 करोड़ ब्रदर्स हैं- हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई-2, उनको किससे वर्सा मिलना है? (किसी ने कहा- बाप से) कौन-से बाप से? उन सभी मनुष्यों को बेहद मनुष्य-सृष्टि के बाप से वर्सा मिलना है।

अभी तो कलियुग है। इतने सभी मनुष्य हैं। अच्छा! सतयुग में तो इतने मनुष्य नहीं हैं ना! तो सतयुग में जो वर्सा मिला है, तो उसने दिया है ना! क्या कहा? बोलने वाला कौन? (किसी ने कहा- शिव) किसके तन में बोल रहा है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा के तन में) कब की बात है? 1966 की बात है। तो सतयुग में जो वर्सा मिला है तो उसने दिया ना! किसने? (किसी ने कहा- आने वाला कोई पार्ट) उसने दिया ना! मैंने (शिव ने) नहीं दिया, इसने (ब्रह्मा ने) नहीं दिया। किसने दिया? उसने दिया ना! तो 'उसने' कह

करके दूर क्यों कर दिया? (किसी ने कहा-...मनुष्य-सृष्टि के बाप के लिए) हाँ, जो मनुष्य-सृष्टि का बाप है- नारायण, नर से नारायण का वर्सा पाने वाला, सन् 1966 में मुरली में उसके जन्म की घोषणा कर दी- इन लक्ष्मी-नारायण का जन्म कब हुआ? आज से 10 वर्ष कम 5 हज़ार वर्ष हुआ। "इन ल॰ना॰ का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।" (मु॰4.3.70 पृ॰3 मध्य) (ये 1966 की मुरली है) माना 1976 में (मानसी जन्म) हुआ। अभी सतयुग तो नहीं है। सतयुग में जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो जो और-2 धर्मपिताएँ और उनके फॉलोअर्स थे, वो कहाँ थे? (किसी ने कहा-परमधाम में थे) तो ये किसने वर्सा दिया? इन धर्मपिताओं ने तो नहीं दिया होगा। किन धर्मपिताओं ने? सतयुग के जो नारायण हैं, उनको वर्सा किसने दिया? (किसी ने कहा- संगमयुगी नारायण ने) हाँ, ये जो धर्मपिताएँ हैं, वो तो परमधामवासी हो जाते हैं और कम-से-कम 2500 सालों के लिए तो परमधामवासी हो ही जाते हैं, सतयुग में तो आते ही नहीं। तो सतयुग के नारायण को वर्सा कहाँ से देंगे? देंगे? नहीं देते। तो किसने वर्सा दिया? सतयुग के नारायण माने कृष्ण को, दादा लेखराज वाली आत्मा जो सतयुग में कृष्ण बनती है, उसको वर्सा किसने दिया? संगमयुगी नारायण ने दिया।

सभी धर्मपिताएँ, जब लड़ाई लगेगी तब ही तो मुक्तिधाम में जाएँगे ना और उनके फॉलोअर्स भी जाएँगे। तो ये तुम, जो बाबा समझाते रहते हैं कि तुम्हारी बुद्धि में ये फिरता रहे। क्या फिरता रहे? तुम्हारी बुद्धि में ये नॉलेज चलती रहे कि मनुष्य जो नर से नारायण-जैसे देवता बनते हैं, उन देवताओं को देवत्व का वर्सा किसने दिया, कब दिया? काम करते, उठते, बैठते, चलते, सोते ये रहे बुद्धि में नॉलेज कि मुझे ये बात समझानी है। क्या बात? कि सतुयग में जो राधा-कृष्ण पैदा होंगे, उनको वर्सा कौन देगा, उनको जन्म देने वाला बाप कौन होगा और बाप होगा तो कोई वर्सा देगा या नहीं देगा? वर्सा देगा। वर्सा दिया था। तो जो मुक्तिधाम में जाएँगे, जब लड़ाई लगेगी तो वो मुक्तिधाम में जाएँगे।

अभी समझाया कोई ने नहीं है। ये बात कोई ने समझाई नहीं है कि सतयुग में जो महाराजा बनेंगे, उनको महाराजाई का टाइटिल कौन देगा, महाराजाई का वर्सा कौन देगा? पैदा होते ही महाराज बन जाते हैं क्या? (किसी ने कहा- नहीं) तो कौन वर्सा देगा? (किसी ने कहा-शिवबाप) अभी तक ये बात कोई ने नहीं समझाई। ये बात कोई ने नहीं समझाई? (किसी ने कहा- समझाया) समझाया ना! ब्रह्माकुमारियों को समझाया कि राधा-कृष्ण का जन्म किससे होगा, बाप कौन होगा, राधा-कृष्ण को महाराजाई का वर्सा देने वाला बाप कौन होगा? तो क्या कहते हैं वो? (किसी ने कहा- वो शिवबाप कहते) शिवबाप कैसे देगा? वो तो संगम में आता है, सतयुग में थोड़े ही आता है। तो ये बात तुम बच्चों को समझानी है।

ये बात मैं (शिव) नहीं समझाऊँगा, सीधे-2 बताऊँगा नहीं कि मनुष्य-सृष्टि का वो पिता कौन है- ये है, वो है, कौन है? वो मनुष्य-सृष्टि का पिता जो होगा, वो स्वयं ही तुम बच्चों को परिचय देता है अपना। ये बात दूसरी है कि तुम सब बच्चे मृत्युलोक में बैठे हो या अमरलोक में बैठे हो? मृत्युलोक में बैठे हो। हद के मृत्युलोक में बैठे हो कि बेहद के मृत्युलोक में भी बैठे हो? बेहद के मृत्युलोक में। निश्चयबुद्धि माना बाप का बच्चा बना, जन्म लिया; अनिश्चयबुद्धि बना माना मृत्युलोक में चला गया, मृत्युलोकवासी हो

गया। तो निश्चय-अनिश्चय का चक्र चलता रहता है या नहीं चलता रहता है? चलता रहता है। जब जन्म लेते हैं, भट्ठी में जाते हैं, तो बड़ी खुशी होती है, सतोप्रधान स्टेज होती है; फिर जब चलते-2 तामसी बनते हैं, तो बाप को भूलने लगते हैं, अनिश्चयबुद्धि होने लगते हैं। क्यों? क्योंकि अनेकों की बातें सुनते हैं। नहीं तो बाप कहते हैं- एक से ज्ञान सुनना चाहिए, अनेकों से सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। "मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।" (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) ज्ञान व्यभिचारी होगा माने बुद्धि भी व्यभिचारी हो जाएगी। तो जो बात समझानी है, वो दूसरों को समझाते नहीं हो; इसलिए तुमको भी धारणा नहीं होती है, दिव्य गुणों की धारणा नहीं होती है। ओमशांति।